वन एवं वन्य जीव संसाधन

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» जैव-विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र

प्रश्न 1 (आसान). जैव-विविधता का एक उदाहरण दो।
उत्तर – जंगल में अलग-अलग तरह के पेड़, जानवर, और पक्षी।

प्रश्न 2 (आसान). पारिस्थितिकी तंत्र में कौन-कौन से घटक शामिल होते हैं?
उत्तर – जीवित प्राणी (पेड़-पौधे, जानवर) और अजैविक घटक (हवा, पानी, मिट्टी, सूरज की रोशनी)।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर हमारे आस-पास के छोटे कीड़े-मकोड़े खत्म हो जाएँ, तो क्या हमें कोई फर्क पड़ेगा? क्यों?
उत्तर – हाँ, बहुत फर्क पड़ेगा। कीड़े-मकोड़े फसलों का परागण करते हैं, मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं, और पक्षियों का भोजन भी होते हैं। इनके बिना पूरा पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ जाएगा।

प्रश्न 4 (कठिन). जैव-विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र एक-दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं?
उत्तर – जैव-विविधता का मतलब है जीवों की विविधता। यह विविधता ही अलग-अलग जीवों को एक साथ मिलकर एक जटिल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में मदद करती है, जहाँ सभी एक-दूसरे पर निर्भर होकर रहते हैं। जितनी ज़्यादा जैव-विविधता, उतना ही मज़बूत पारिस्थितिकी तंत्र।

» वन्य जीवन और वनों के संरक्षण की आवश्यकता

प्रश्न 5 (आसान). संरक्षण का क्या अर्थ है?
उत्तर – प्रकृति और जीवों को बचाना और उनकी देखभाल करना।

प्रश्न 6 (आसान). संरक्षण से कौन से संसाधन सुरक्षित रहते हैं?
उत्तर – जल, वायु और मृदा।

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर हम वनों का संरक्षण न करें तो क्या होगा?
उत्तर – जैव-विविधता कम हो जाएगी, कई जीव-जंतु और पेड़-पौधे विलुप्त हो जाएंगे, और हमें ज़रूरी प्राकृतिक संसाधन नहीं मिलेंगे।

प्रश्न 8 (कठिन). पारिस्थितिकी विविधता और आनुवंशिक विविधता में क्या अंतर है, और दोनों संरक्षण के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं?
उत्तर – पारिस्थितिकी विविधता का मतलब है, अलग-अलग तरह के जीव-जंतु और पेड़-पौधे एक साथ रहना। आनुवंशिक विविधता का मतलब है, एक ही प्रजाति के जीवों के अंदर अलग-अलग गुण होना। दोनों ही ज़रूरी हैं क्योंकि विविधता से पर्यावरण स्थिर रहता है और जीव बदलते हालात से लड़ने में सक्षम होते हैं। अगर सिर्फ एक ही तरह के पौधे या जानवर हों, तो बीमारी या बदलाव से वो सब खत्म हो सकते हैं।

» भारत में वन्यजीवन संरक्षण के कानूनी उपाय

प्रश्न 9 (आसान). भारतीय वन्यजीवन (रक्षण) अधिनियम किस वर्ष में लागू किया गया था?
उत्तर – 1972

प्रश्न 10 (आसान). 'प्रोजेक्ट टाइगर' का उद्देश्य क्या था?
उत्तर – बाघों का संरक्षण करना।

प्रश्न 11 (मध्यम). भारतीय वन्यजीवन (रक्षण) अधिनियम 1972 के तहत किन दो मुख्य कार्यों पर जोर दिया गया था?
उत्तर – शिकार पर प्रतिबंध और वन्यजीव आवासों का कानूनी रक्षण।

प्रश्न 12 (कठिन). वन्यजीवन संरक्षण के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई किन्हीं दो विशेष परियोजनाओं के नाम बताइए।
उत्तर – प्रोजेक्ट टाइगर और एक सींग वाले गैंडे का संरक्षण।

» प्रोजेक्ट टाइगर और इसका महत्व

प्रश्न 13 (आसान). प्रोजेक्ट टाइगर किस वर्ष में शुरू किया गया था?
उत्तर – 1973

प्रश्न 14 (आसान). प्रोजेक्ट टाइगर का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – बाघों को विलुप्त होने से बचाना

प्रश्न 15 (मध्यम). प्रोजेक्ट टाइगर को 'विश्व की बेहतरीन वन्य जीव परियोजनाओं में से एक' क्यों माना जाता है? दो कारण बताओ।
उत्तर – पहला कारण, इसने बाघों की घटती संख्या को स्थिर किया और कई जगहों पर बढ़ाया भी। दूसरा, यह सिर्फ़ एक प्रजाति को नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिक तंत्र (इकोसिस्टम) और जैव-विविधता को बचाने का एक सफल उदाहरण है।

प्रश्न 16 (कठिन). आपको क्या लगता है, बाघों की संख्या कम होने के मुख्य कारण क्या रहे होंगे, जिसके कारण 'प्रोजेक्ट टाइगर' की ज़रूरत पड़ी? कोई तीन कारण बताओ।
उत्तर – बाघों की संख्या कम होने के मुख्य कारण रहे होंगे: 1. अवैध शिकार (पोचिंग) - उनकी खाल और शरीर के अंगों के लिए। 2. निवास स्थान का नुकसान - जंगल काटे जाने से उनके रहने और शिकार करने की जगह कम हो गई। 3. मानव-वन्यजीव संघर्ष - जैसे-जैसे इंसान जंगल के करीब आए, जानवरों और इंसानों के बीच टकराव बढ़ा, जिससे बाघों को भी खतरा हुआ।

» वन और वन्य जीव संसाधनों का वर्गीकरण (प्रकार)

प्रश्न 17 (आसान). भारत में वनों को मुख्यतः कितने वर्गों में बांटा गया है?
उत्तर – तीन वर्गों में: आरक्षित, रक्षित और अवर्गीकृत।

प्रश्न 18 (आसान). किस प्रकार के वनों को सबसे मूल्यवान माना जाता है?
उत्तर – आरक्षित वन।

प्रश्न 19 (मध्यम). आरक्षित वन और रक्षित वन में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – आरक्षित वन में कोई मानवीय गतिविधि या प्रवेश प्रतिबंधित होता है, जबकि रक्षित वन में कुछ सीमित गतिविधियों की अनुमति होती है, जैसे सूखी लकड़ी इकट्ठा करना या पशुओं को चराना, लेकिन वे सरकार की देखरेख में रहते हैं।

प्रश्न 20 (कठिन). अवर्गीकृत वनों का प्रबंधन सामान्यतः कौन करता है और उनमें कौन सी गतिविधियाँ संभव हैं?
उत्तर – अवर्गीकृत वनों का प्रबंधन सामान्यतः स्थानीय समुदायों और सरकार के अधीन होता है। इनमें स्थानीय लोग लकड़ी और चारे के लिए जाते हैं, और इन पर सरकार का सीधा नियंत्रण कम होता है।

» समुदाय और वन संरक्षण में उनकी भूमिका

प्रश्न 21 (आसान). कौन से लोग अक्सर वनों के सबसे करीब रहते हैं और उनके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?
उत्तर – स्थानीय समुदाय और आदिवासी लोग।

प्रश्न 22 (आसान). चिपको आंदोलन वन संरक्षण के किस पहलू का उदाहरण है?
उत्तर – समुदाय आधारित वन संरक्षण का।

प्रश्न 23 (मध्यम). स्थानीय समुदायों द्वारा वनों का संरक्षण क्यों ज़रूरी है, सिर्फ सरकार के भरोसे क्यों नहीं छोड़ा जा सकता?
उत्तर – क्योंकि वन उनकी आजीविका और संस्कृति का हिस्सा होते हैं, और वे वनों को बचाने के लिए अधिक प्रतिबद्ध होते हैं।

प्रश्न 24 (कठिन). राजस्थान के अलवर जिले में भैरोंदेव डाकव 'सोंचुरी' का क्या महत्व है?
उत्तर – यह 1200 हेक्टेयर वन भूमि का एक उदाहरण है जिसे 5 गाँवों के लोगों ने मिलकर अपने नियम बनाकर संरक्षित किया, जिससे यह दिखाया गया कि समुदाय भी सरकार के बिना वन संरक्षण कर सकते हैं।

» परंपरागत संरक्षण तरीके और आंदोलन

प्रश्न 25 (आसान). चिपको आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – पेड़ों की कटाई रोकना।

प्रश्न 26 (आसान). किस आंदोलन ने दिखाया कि रासायनिक खाद के बिना भी खेती हो सकती है?
उत्तर – बीज बचाओ आंदोलन।

प्रश्न 27 (मध्यम). संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) में कौन-कौन शामिल होते हैं?
उत्तर – गाँव के ग्रामीण और वन विभाग के अधिकारी।

प्रश्न 28 (कठिन). पारंपरिक संरक्षण तरीकों में पवित्र पेड़ों के झुरमुट कैसे काम करते हैं?
उत्तर – समुदाय किसी खास जंगल के टुकड़े या पेड़ों के समूह को देवी-देवताओं से जोड़कर पवित्र मानता है, जिससे वहाँ कोई पेड़ नहीं काटता और वन्यजीवों को भी आश्रय मिलता है। यह एक धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वास पर आधारित संरक्षण तरीका है।

» संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) कार्यक्रम

प्रश्न 29 (आसान). संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम की शुरुआत किस वर्ष हुई थी?
उत्तर – 1988

प्रश्न 30 (आसान). इस कार्यक्रम में कौन-कौन मिलकर काम करते हैं?
उत्तर – वन विभाग और स्थानीय समुदाय

प्रश्न 31 (मध्यम). स्थानीय समुदायों को संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम से क्या लाभ मिलता है?
उत्तर – गैर-इमारती वन उत्पाद और इमारती लकड़ी से होने वाले लाभ में हिस्सेदारी।

प्रश्न 32 (कठिन). संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – इसका मुख्य उद्देश्य क्षरित वनों का प्रबंधन और पुनर्निर्माण करना है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्थानीय समुदायों को वनों के संरक्षण में सीधे शामिल करता है, जिससे संरक्षण अधिक प्रभावी होता है और समुदायों की आजीविका भी सुधरती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक जंगल में केवल पेड़ और हिरण हैं। अगर पेड़ों को काटा जाए, तो इस पारिस्थितिकी तंत्र पर क्या असर होगा?

› पहला कदम: पेड़ों के कटने से हिरणों को खाना नहीं मिलेगा और उनका आश्रय भी खत्म हो जाएगा।

› दूसरा कदम: खाने और आश्रय की कमी के कारण हिरणों की संख्या कम होने लगेगी या वे दूसरी जगह चले जाएंगे।

› तीसरा कदम: जब हिरण कम होंगे, तो जंगल के शिकारी जानवरों (जैसे चीता या तेंदुआ) को भी खाना नहीं मिलेगा, जिससे उनकी संख्या भी घटेगी।

› चौथा कदम: इस तरह, पेड़ों के कटने से पूरा जंगल का पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाएगा और धीरे-धीरे खत्म होने लगेगा।

उत्तर – पेड़ों के कटने से हिरणों की संख्या घटेगी, जिससे शिकारियों की संख्या भी कम होगी और पूरा जंगल का पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाएगा।

उदाहरण 2. प्रश्न: वन्य जीवन और वनों के संरक्षण की किन्हीं दो आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि क्यों ये ज़रूरी हैं।

› दूसरा कदम: पहली आवश्यकता ये है कि अगर हम वनों और वन्य जीवन को नहीं बचाएंगे, तो हमारी पृथ्वी पर जो अलग-अलग तरह के जीव-जंतु और पेड़-पौधे हैं, वो खत्म हो जाएंगे। इसे ही 'पारिस्थितिकी विविधता' कहते हैं। सोचो, अगर सिर्फ इंसान ही बचे, तो कैसा लगेगा? सब कुछ खाली-खाली लगेगा। इसलिए विविधता ज़रूरी है।

› तीसरी आवश्यकता: दूसरी बात ये है कि हम इंसानों को जीने के लिए पानी, साफ हवा और उपजाऊ मिट्टी चाहिए, है ना? ये सब हमें इन्हीं जंगलों और प्राकृतिक तंत्र से मिलते हैं। अगर जंगल नहीं रहेंगे, तो बारिश कम होगी, हवा गंदी होगी, और मिट्टी बंजर हो जाएगी। फिर हम कहां से लाएंगे ये सब? इसलिए इन जीवन-साध्य संसाधनों को बचाए रखने के लिए संरक्षण बहुत ज़रूरी है।

उत्तर – वन्य जीवन और वनों के संरक्षण की दो मुख्य आवश्यकताएं हैं: पहला, पारिस्थितिकी विविधता को बनाए रखना ताकि हमारा पर्यावरण संतुलित रहे; और दूसरा, हमारे जीवन के लिए ज़रूरी संसाधन जैसे जल, वायु और मृदा को सुरक्षित रखना।

उदाहरण 3. भारतीय वन्यजीवन (रक्षण) अधिनियम 1972 के किन्हीं तीन मुख्य प्रावधानों का वर्णन करें।

› पहला प्रावधान है 'शिकार पर प्रतिबंध'। इसका मतलब है कि किसी भी जंगली जानवर का शिकार करना या उसे मारना गैरकानूनी है।

› दूसरा प्रावधान है 'वन्यजीव आवासों का कानूनी रक्षण'। यानी, जानवरों के रहने की जगहें, जैसे जंगल, नदियां, या पहाड़, कानूनी तौर पर सुरक्षित की गई हैं ताकि उन्हें कोई नुकसान न पहुंचा सके।

› तीसरा प्रावधान है 'जंगली जीवों के व्यापार पर रोक'। इसका मतलब है कि जंगली जानवरों की खाल, हड्डियां, दांत या किसी भी हिस्से का व्यापार करना पूरी तरह से मना है, क्योंकि इससे जानवरों की प्रजातियों को खतरा होता है।

उत्तर – भारतीय वन्यजीवन (रक्षण) अधिनियम 1972 के मुख्य प्रावधान हैं: शिकार पर प्रतिबंध, वन्यजीव आवासों का कानूनी रक्षण, और जंगली जीवों के व्यापार पर रोक।

उदाहरण 4. प्रोजेक्ट टाइगर के तहत भारत के किन्हीं दो बाघ अभयारण्यों के नाम बताओ और यह भी समझाओ कि यह सिर्फ़ बाघों को बचाने से कहीं ज़्यादा क्यों है?

› पहला, हम दो बाघ अभयारण्यों के नाम बताएंगे। जैसे, उत्तराखंड में कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान और पश्चिम बंगाल में सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान।

› दूसरा, हम समझाएंगे कि 'प्रोजेक्ट टाइगर' सिर्फ़ बाघों को बचाने से ज़्यादा क्यों है। देखो, बाघ जंगल के 'टॉप प्रीडेटर' (शीर्ष शिकारी) होते हैं।

› अगर बाघ स्वस्थ हैं और उनकी संख्या ठीक है, तो इसका मतलब है कि जंगल में शिकार करने के लिए हिरण, सांभर जैसे जानवर भी अच्छी संख्या में हैं।

› और अगर ये जानवर अच्छी संख्या में हैं, तो इसका मतलब है कि जंगल में घास, पेड़-पौधे, और पानी भी पर्याप्त मात्रा में हैं।

› तो, बाघों को बचाना असल में पूरे जंगल, उसके पेड़-पौधों, जानवरों, और पानी के स्रोतों को बचाना है। यह पूरे इकोसिस्टम के संतुलन को बनाए रखता है।

› यह हमें सिखाता है कि प्रकृति में सब कुछ एक दूसरे से जुड़ा हुआ है।

› इसीलिए 'प्रोजेक्ट टाइगर' सिर्फ़ एक प्रजाति को नहीं, बल्कि एक विशाल जैव-विविधता और पारिस्थितिक तंत्र को बचाता है।

उत्तर – उत्तराखंड में कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान और पश्चिम बंगाल में सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान प्रोजेक्ट टाइगर के दो उदाहरण हैं। यह परियोजना सिर्फ़ बाघों को बचाने से कहीं ज़्यादा है क्योंकि बाघ एक 'अंब्रेला स्पीशीज़' की तरह होते हैं - उन्हें बचाने से उनके पूरे निवास स्थान, जिसमें अनगिनत अन्य प्रजातियाँ और प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं, का भी संरक्षण हो जाता है, जिससे पूरे पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बना रहता है।

उदाहरण 5. वन विभाग ने एक बड़े जंगल को तीन हिस्सों में बांटा है: पहले हिस्से में कोई भी बिना अनुमति के प्रवेश नहीं कर सकता और लकड़ी काटना या शिकार करना पूरी तरह मना है। दूसरे हिस्से में स्थानीय लोग थोड़ी-बहुत सूखी लकड़ी या फल इकट्ठा कर सकते हैं, लेकिन शिकार की अनुमति नहीं है। तीसरा हिस्सा गाँव के पास है और यहाँ गाँव वाले अपनी मवेशियों को चरा सकते हैं और थोड़ी-बहुत लकड़ी भी ले सकते हैं, लेकिन इसकी देखरेख गाँव वाले खुद करते हैं। बताओ, ये तीनों हिस्से वनों के किस वर्गीकरण में आएंगे?

› पहला हिस्सा जहाँ strictest rules हैं और कोई गतिविधि पूरी तरह मना है, वह 'आरक्षित वन' कहलाएगा।

› दूसरा हिस्सा जहाँ कुछ सीमित छूटें हैं जैसे सूखी लकड़ी इकट्ठा करना, वह 'रक्षित वन' कहलाएगा।

› तीसरा हिस्सा जहाँ स्थानीय समुदाय खुद प्रबंधन करते हैं और थोड़ी-बहुत गतिविधियों की अनुमति है, वह 'अवर्गीकृत वन' कहलाएगा।

उत्तर – पहला हिस्सा: आरक्षित वन। दूसरा हिस्सा: रक्षित वन। तीसरा हिस्सा: अवर्गीकृत वन।

उदाहरण 6. राजस्थान के सरिस्का बाघ रिज़र्व में स्थानीय समुदाय ने वन संरक्षण में क्या भूमिका निभाई?

› सबसे पहले, सरिस्का बाघ रिज़र्व में स्थानीय गाँवों के लोगों ने वन्य जीवन रक्षण अधिनियम के तहत अवैध खनन (खदानों में खुदाई) को बंद करवाने के लिए संघर्ष किया।

› दूसरा, उन्होंने खुद अपने वन्य जीव आवासों की रक्षा की और सरकार के हस्तक्षेप को भी स्वीकार नहीं किया, मतलब वे खुद ही अपने नियम बनाकर जंगल की देखरेख कर रहे थे।

› तीसरा, उन्होंने अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए वनों पर निर्भर रहने के बजाय उन्हें बचाने के लिए सक्रिय कदम उठाए, यह समझते हुए कि वनों का होना उनके दीर्घकालिक फायदे में है।

उत्तर – सरिस्का बाघ रिज़र्व में स्थानीय समुदाय ने अवैध खनन के खिलाफ संघर्ष किया और वन्य जीव आवासों की खुद रक्षा करके वन संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उदाहरण 7. चिपको आंदोलन क्या था और यह कैसे सफल हुआ?

› पहला कदम: चिपको आंदोलन हिमालय के गाँवों में शुरू हुआ, जहाँ लोग पेड़ों की कटाई से परेशान थे।

› दूसरा कदम: जब ठेकेदार पेड़ काटने आते थे, तो गाँव की महिलाएँ और पुरुष पेड़ों से लिपट जाते थे (चिपक जाते थे), ताकि पेड़ न काटे जा सकें।

› तीसरा कदम: उन्होंने सिर्फ कटाई रोकी ही नहीं, बल्कि स्थानीय पेड़ लगाकर वनीकरण अभियान भी चलाया।

› चौथा कदम: इस आंदोलन ने दिखाया कि स्थानीय लोग अपनी प्रकृति की रक्षा के लिए कितने प्रतिबद्ध होते हैं और कैसे मिलकर एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

उत्तर – चिपको आंदोलन एक अहिंसक आंदोलन था जिसमें स्थानीय लोग पेड़ों से चिपककर उनकी कटाई रोकते थे और स्थानीय प्रजातियों के पेड़ लगाकर वनीकरण भी करते थे, जिससे यह सफल हुआ और पर्यावरण संरक्षण का एक मजबूत संदेश दिया।

उदाहरण 8. संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

› पहला कदम, इस कार्यक्रम की शुरुआत कब और कहाँ हुई, यह बताना है। (1988 में ओडिशा)

› दूसरा कदम, इसमें कौन-कौन शामिल होता है, यह समझाना है। (वन विभाग और स्थानीय समुदाय)

› तीसरा कदम, इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्या है, यह बताना है। (क्षरित वनों का प्रबंधन और पुनर्निर्माण)

› चौथा कदम, स्थानीय समुदायों को इसमें भाग लेने से क्या लाभ मिलता है, यह समझाना है। (गैर-इमारती वन उत्पाद और इमारती लकड़ी में हिस्सेदारी)

उत्तर – संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम की शुरुआत 1988 में ओडिशा में हुई थी। इसकी मुख्य विशेषता है कि इसमें वन विभाग और स्थानीय समुदाय मिलकर क्षरित (खराब हो चुके) वनों के प्रबंधन और पुनर्निर्माण का काम करते हैं। इसके बदले में, स्थानीय समुदायों को गैर-इमारती वन उत्पाद और सफल संरक्षण के बाद इमारती लकड़ी से होने वाले लाभ में हिस्सेदारी मिलती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय पर्यावरण से जुड़ा है, इसलिए बोर्ड परीक्षाओं में इसके महत्त्व और संरक्षण पर अक्सर सवाल आते हैं। उदाहरणों के साथ तैयारी करें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'भारतीय वन्यजीवन (रक्षण) अधिनियम 1972' और 'प्रोजेक्ट टाइगर' जैसे उदाहरणों को अच्छे से याद कर लेना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'प्रोजेक्ट टाइगर' की शुरुआत का वर्ष और इसके महत्व पर सीधा प्रश्न आता है, तो इसे अच्छे से समझना और याद रखना।

• यह वर्गीकरण सीधा प्रश्न के रूप में आता है, जैसे 'आरक्षित और रक्षित वन में अंतर स्पष्ट करें' – इसे अच्छे से याद कर लेना!

• बोर्ड परीक्षा में, ऐसे उदाहरणों को ज़रूर लिखो जैसे चिपको आंदोलन या राजस्थान के भैरोंदेव डाकव 'सोंचुरी' के बारे में, जब आपसे 'समुदाय की भूमिका' पूछी जाए। इससे आपके उत्तर को अच्छे अंक मिलेंगे।

• चिपको आंदोलन और बीज बचाओ आंदोलन पर अक्सर सीधे प्रश्न आते हैं। उनकी विशेषताएँ और सफलता के कारण ज़रूर याद रखना, बेटा।

• यह कार्यक्रम अक्सर 'वन और वन्य जीव संरक्षण' वाले बड़े प्रश्नों में एक महत्वपूर्ण बिंदु होता है। इसकी शुरुआत, उद्देश्य और सामुदायिक भागीदारी पर खास ध्यान दें।

एक नज़र में रिवीज़न

› जैव-विविधता: जीवन की विविधता। पारिस्थितिकी तंत्र: जीवों की परस्पर निर्भरता।

› 1972 अधिनियम, शिकार-व्यापार रोक, आवास रक्षण, प्रोजेक्ट टाइगर जैसे उपाय।

› प्रोजेक्ट टाइगर 1973 में शुरू हुआ; बाघ संरक्षण = पूरे इकोसिस्टम का संरक्षण।

› वन वर्गीकरण: आरक्षित (कड़ा नियंत्रण), रक्षित (सीमित छूट), अवर्गीकृत (स्थानीय प्रबंधन)।

› स्थानीय समुदाय वनों और वन्यजीवों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

› चिपको, बीज बचाओ, पवित्र झुरमुट, JFM: सामुदायिक संरक्षण पहलें।

› JFM: 1988, ओडिशा। स्थानीय समुदाय + वन वभिाग मलिकर वन संरक्षण।